बाबा जी की कृपा का सागर

सिद्धयोग ध्यान शिक्षक द्वारा एक पत्र

१ अक्टूबर, २०१५

प्रिय सिद्धयोगी,

२ अक्टूबर १९८२, गुरुदेव सिद्धपीठ में पूर्णिमा की एक सुन्दर रात्रि को बाबा मुक्तानन्द, अपनी पार्थिव देह का त्याग कर, ब्रह्माण्डीय चेतना में पूर्णतः विलीन हो गए। जब बाबा जी अपनी भौतिक देह में थे, तब भी वे समाधि की स्थिति, दिव्य आत्मा के साथ निरन्तर ऐक्य की अवस्था में रहते थे। जब उन्होंने देह का परित्याग किया, वे इसके बन्धनों से मुक्त हो गए और महासमाधि में प्रविष्ट हो गए।

बाबा जी के महासमाधि लेने के कुछ वर्ष पूर्व, एक भक्त ने पूछा था कि जब वे भौतिक शरीर में नहीं रहेंगे, तब वे अपने शिष्यों को मार्गदर्शन एवं जिज्ञासु में आन्तरिक आध्यात्मिक शक्ति का जागरण अर्थात शक्तिपात दीक्षा कैसे प्रदान करेंगे। बाबा जी ने उत्तर दिया :

अभी, मैं एक नदी के रूप में हूँ और बाद में मैं समस्त सागर बन जाऊँगा।

२ अक्टूबर की पूर्णिमा की उस रात्रि, स्वामी मुक्तानन्द रूपी वह नदी, मुक्तानन्द का सागर बन गई। और अपने वचनानुसार, बाबा जी की परम प्राप्ति सागर के समान हो गई : अपनी पूर्णता में सबके लिए सुलभ।

मुझे बाबा जी की विशाल सागर वाली यह छवि बहुत प्यारी लगती है। बाबा जी के बारे में यही मेरा अनुभव है। और बाबा जी के महासमाधि लेने के बाद के वर्षों में, जीवन के सभी क्षेत्रों एवं हर आयु के सिद्धयोगियों ने यह अनुभव बाँटा है। बाबा जी हमारे ध्यान में, स्वप्नों में और हमारे विचारों में प्रकट होते हैं। हम उनकी सिखावनियों, उनके चित्रों, और उनके सिखाए गए अभ्यासों के माध्यम से उनसे मिलते हैं। मैंने पाया कि जब मैं अपना ध्यान अपने हृदय पर केन्द्रित करती हूँ, मैं उन गुणों को पहचान पाती हूँ, जिन्हें मैं बाबा जी से जोड़ती हूँ जैसे सार्मथ्य, हास्य तथा गहन प्रज्ञान तक पहुँच। जब मैं ''मुक्तानन्द के सागर'' का विचार करती हूँ, तब मुझे ऐसा लगता है कि मुझे इसकी अथाह गहराइयों में गोता लगाने हेतु आमन्त्रित किया जा रहा है, यह जानते हुए भी कि बाबा जी की कृपा मेरी कल्पना से कहीं अधिक महान है।

जब हम बाबा जी की महासमाधि के माह का महोत्सव मनाते हैं, हम बाबा जी की स्थिति, उनकी सिखावनियों, उनकी कृपा का स्मरण करके अपने केन्द्रण को और अधिक उन्नत करते हैं। और हमें लगता है कि वे यहाँ हमारे पास ही हैं, जैसा कि एक सिद्धयोगी ने हाल ही में मुझे बताया :

प्रत्येक अक्टूबर माह में, मैंने बाबा जी की उपस्थिति से मेरे जीवन में आई, कृपा की गहराई को नवीनता से महसूस किया। स्थानीय सिद्धयोग संकीर्तन एवं ध्यान समूह में, हम बाबा जी के नाम का संकीर्तन करते, उनके जीवन-वृतांत को सुनते, और उनकी सिखावनियों का बार-बार अध्ययन करते। मुझे कई बार ऐसा प्रतीत होता है, जैसे बाबा जी हमारे आनन्दपूर्ण नामसंकीर्तन का प्रत्युत्तर दे रहें हैं, जैसे कि वे हमारे साथ हमारी ही तरह प्रसन्नता से भावविभोर स्वर में नामसंकीर्तन गा रहे हैं। और फिर जब हम पूर्ण रूप से मौन होकर बैठ जाते, तब मुझे महसूस होता कि बाबा जी ने भी अपनी आँखे बन्द कर ली हैं और हमारे साथ बैठे हुए हैं। और इस माह प्रत्येक समय, जब भी मैं ध्यान करता हूँ मैं विशेष रूप से श्री गुरु की कृपा की शक्ति के प्रति जागरूक रहता हूँ।

इस सिद्धयोगी के ध्यान के इस अनुभव ने मुझे प्रभावित किया, जो इस वर्ष के लिए विशेषरूप से महत्वपूर्ण है, जब श्री गुरुमाई का वर्ष २०१५ के लिए दिया गया सन्देश इसी अभ्यास पर केन्द्रण करता है। गुरुमाई जी ने अपना सबसे करूणामय निर्देश दिया :

मुड़ो
अन्तर की ओर
करो सहजता से
ध्यान

और अब, जब हम जनवरी माह से प्रत्येक महीने श्री गुरुमाई के सन्देश का लगातार अध्ययन व अन्वेषण कर रहे हैं, तब श्री गुरु की कृपा से ध्यान का हमारा अभ्यास निरन्तर और जीवन्त हो गया है।

अब अक्टूबर आ गया है, और हमारे पास श्री गुरुमाई के सन्देश पर और अधिक गहराई से कार्य करने का स्वर्णिम अवसर है, और इस प्रकार हम अपनी समझ तथा ध्यान के अभ्यास को दृढ़ कर सकते हैं। हम बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि के सम्मान में सार्वभौमिक सिद्धयोग शक्तिपात ध्यान शिविर में भाग ले सकते हैं।

बाबा जी ने शक्तिपात ध्यान शिविर की रचना सन् १९७३ में, जिज्ञासुओं को सभी स्थानों पर शक्तिपात प्राप्त कर सकने के माध्यम के रूप में की। यह एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा श्री गुरु जिज्ञासु के अन्तर में स्थित परम आत्मा की पहचान को उजागर कर देते हैं। ध्यान शिविर में भाग लेना साधक की साधना में प्रगति लाता है –

वास्तव में, प्रायः प्रभावशाली प्रगति लाता है।

वर्ष २००६ में श्री गुरुमाई ने बाबा जी की महासमाधि के सम्मान में शक्तिपात ध्यान शिविर को एक वार्षिक कार्यक्रम के रूप में आयोजित करना आरम्भ किया। यह वर्ष के इस समय में सुन्दरता से बैठता है, जब बाबा जी की उपस्थिति को हम अति उत्सुकता से अनुभव करते हैं, हम ऐसे स्मरणीय कार्यक्रम में भाग लेकर उन्हें याद कर सकते हैं, और उनका सम्मान कर सकते हैं। कई सिद्धयोगियों के लिए प्रतिवर्ष बाबा जी की महासमाधि के समय शक्तिपात ध्यानशिविर में भाग लेना एक नियमित अभ्यास बन गया है।

सन् २००६ से यह मेरा भी नियमित अभ्यास हो गया है। और मैंने देखा है कि प्रत्येक शक्तिपात ध्यानशिविर में भाग लेने से मेरा बोध और अधिक सूक्ष्म होता गया है। मैं अन्तर आत्मा के शाश्वत अनुभव को पहचानने तथा उस अनुभव में बने रहने में, अधिकाधिक समर्थ हो गई हूँ। इसने मेरे जीवन के प्रत्येक दिन के साधारण नित्य कर्मों और दैनिक कार्य-कलापों में, पूर्ण जागरूक बने रहने व अधिक आनन्दपूर्ण रहने में समृद्ध बनाया है।

वर्ष २०१५ में, बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि के सम्मान में आयोजित शक्तिपात ध्यान शिविर का शीर्षक है :

धर्म- मार्ग

शक्तिपात ध्यान शिविर के दौरान हम श्री गुरुमाई के सन्देश के अध्ययन और अभ्यास में स्वयं को निमग्न करेंगे। और ऐसा करके, हम मनुष्य के रूप में अपने धर्म को पूरी तरह समझ कर अंगीकार कर सकते हैं।

अक्टूबर के इस माह में, मैं आपको बाबा जी की महासमाधि के महोत्सव में वैश्विक सिद्धयोग संघम् से जुड़ने और शक्तिपात ध्यान शिविर में भाग लेने हेतु आमन्त्रित करती हूँ। मैं आपको बाबा जी को याद करने और उनके सिखाए अभ्यासों के प्रति अपनी वचनबद्धता को दृढ़ करने हेतु आमन्त्रित करती हूँ। मैं आपको बाबा जी की सिखावनियों को पढ़ने, प्रत्येक अक्षर को आनन्द लेकर धीरे-धीरे पढ़ने हेतु प्रोत्साहित करती हूँ। उन्हें अपने हृदय में प्रवेश करने दें तथा उनके प्रज्ञान को अपने दैनिक जीवन के कार्य-कलापों में प्रतिबिम्बित होने दें।

शुभेच्छा सहित,

शालिनी डेवीस,
सिद्धयोग ध्यान शिक्षक